महायोगी स्थूलभद्र

पिछले भाग में पढ़ा–संसार के सुख भोग में कंठ तक डूबे हुए स्थूलभद्र का हृदय एक ही झटके में संसार से उदासीन और विरक्त होकर साधना के पथ पर बढ़ने को उतावला हो गया। उसी समय चतुर्दश पूर्वधारी आचार्य संभूतिविजय पाटलिपुत्र में पधारे। स्थूलभद्र ने उनके चरणों में दीक्षा ले ली। दीक्षित होकर स्थूलभद्र ने विनती की–

प्रखर बुद्धि मुनि स्थूलभद्र ने गुरु चरणों में रहकर एकादश अंगसूत्र का अध्ययन किया।

इसके साथ-साथ वे ध्यान की उच्चसाधना में भी संलग्न रहते। ध्यान करते-करते एक दिन मन में संकल्प उठा–

इधर चातुर्मास काल प्रारम्भ हो रहा था। एक दिन आचार्य संभूतिविजय के पास उनके तीन शिष्य आये और निवेदन किया–

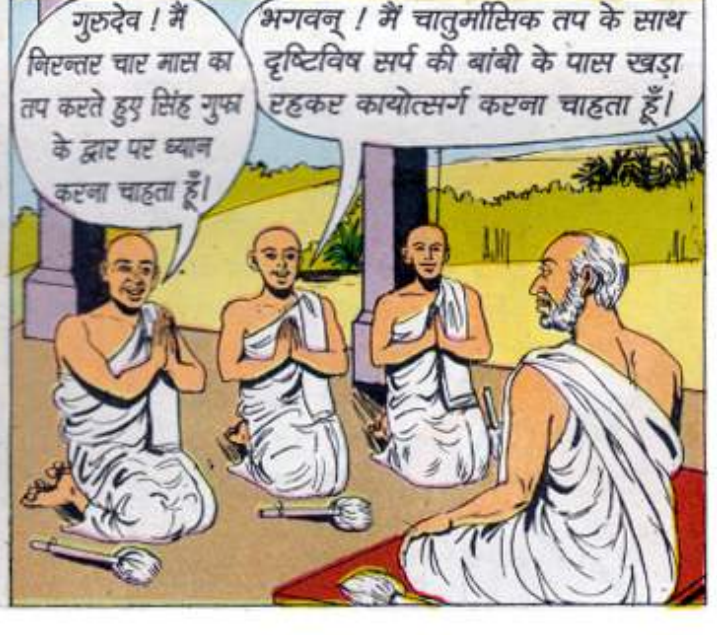

और प्रभु मैं कुएँ की जगत पर कायोत्सर्ग कर चार मास तक ध्यान मग्न रहना चाहता हूँ।

आचार्यश्री कुछ समय विचार मग्न हुए। फिर आशीर्वाद दिया—

वत्स, अपने लक्ष्य में सिद्धि प्राप्त करो।

तभी मुनि स्थूलभद्र ने गुरुचरणों में प्रणाम किया और निवेदन किया—

गुरुदेव ! मैं कोशा गणिका की चित्रशाला में षड्रस भोजन करते हुए चार मास तक विकार विजय की साधना करना चाहता हूँ।

स्थूलभद्र का विचित्र अभिग्रह सुनकर गुरुदेव ध्यानमग्न हो गये। कुछ समय बाद आँखें खोलीं—

वत्स ! तुम्हारा अभिग्रह बहुत कठोर है। अग्निकुण्ड के पास रखा घी नहीं पिघले, यह संभव नहीं। परन्तु तुम दु संभव को भी संभव बनाने में समर्थ बनोगे, मुझे विश्वास है।

स्थूलभद्र ने गुरु चरणों में नमन किया। गुरुदेव ने अपना आशीष हाथ उनके मस्तक पर रखा—

गुरु आज्ञा प्राप्त कर चारों तपस्वी मुनि अपने-अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गये।

मुनि स्थूलभद्र विहार करके पाटलीपुत्र के उद्यान में पधारे। दासी विशाखा ने आकर कोशा को सूचना दी–

स्वामिनी ! स्वामी पधारे हैं।

कोशा हर्ष और विस्मय से उछल पड़ी–

क्या कहती हो विशाखा ! मेरे स्वामी स्थूलभद्र आ गये?

हाँ, सुना है नगर के बाहर उद्यान में विराजे हैं।

उद्यान में? यहाँ क्यों नहीं आये?

वे श्रमण बन गये हैं न। अब केवल आपके नहीं रहे, सबके हैं।

कोशा तुरन्त सज्जित होकर रथ में बैठी और उद्यान में आकर मुनि स्थूलभद्र के दर्शन किये। कोशा की आँखों में अश्रुधारा बह रही थी। एकटक मुनि स्थूलभद्र को निहारती रही।

स्वामी ! मुझे छोड़कर आप कहाँ चले गये थे?

आर्या कोशा?

स्थूलभद्र ने तटस्थ भाव से कोशा की तरफ देखा।